कुम्हार के दिया

माटी के दिया ला बनाथे,
साल भर पसीना गार के,
ऊँखर मेहनत ला सफल करबो,
असो देवारी बर,
माटी के दिया बार के,
कछार ले माटी ला के,
गैरी मताथे पानी डार के,
लोंदी ला चाक मा राख के,
दिया बनाथे हाथ मा सार के,
सुघ्घर दिया बनाके,
रंग रोगन ओमा चढ़ाथे,
फेर देवारी तिहार घरी,
बेचे खातिर ले जाथे,
उंही दिया ला बेच के,
मनाथे अपन तिहार ला,
आवव माटी के दिया जला के,
दुरिहा भगाबो
ऊँखर घर के अंधियार ला,



जीवन चन्द्राकर 'लाल''
बोरसी 52 दुर्ग (छत्तीसगढ़)

मौन का महासागर



शब्दों के बाज़ार में हम,
कांच का आईना ढूंढते रहे,
पर परखने वाले पारखी,
पत्थरों की भाषा बोलते रहे,
हम तो बहती नदी थे,
जो समंदर से मिलने चली थी,
पर तट पर बैठे लोग,
गहराई को लहरों से तौलते रहे,
टूटे कुछ इस तरह कि,
धड़कनों को भी भनक न लगी,
भीड़ के इस शोर में हम,
एक शांत टापू बन गए,
जो कभी साया बनकर,
धूप में साथ चलते थे,
वही पतझड़ की हवा बन,
शाखों से मुंह मोड़ गए,
सफाई का कोई विज्ञापन,
अब हमें मंजूर नहीं,
जब ज़मीर की अदालत में,
हम बेदाग़ खड़े हैं,
बाहर की इस छोटी कचहरी में,
सबूत पेश क्या करना,
जब सच की नज़र में,
हम सबसे बड़े हैं,
वक्त की राख के नीचे,
चिंगारी अब भी ज़िंदा है,
चुपचाप राह पर चलते हैं,
कोई गिला शिकवा नहीं,
जब कालचक्र घूमेगा,
तो सारा सच उभर आएगा,
सूरज को कभी बादलों से,
गवाही मांगते देखा नहीं!

राजेन्द्र लाहिरी पामगढ़ छग

कविता

लगा आवाज सखियों को,
उन्हें यह बात बतलाई।
लिया कागज के पन्नों को,
सभी की नाव बनवाई।
बनाकर नाव कागज की,
मिली सखियाँ व तैराई।
तभी आई लहर तगड़ी,
उलटकर नाव पलटाई।।
नदी के पार जाएँगे,
यही तो ख्वाब अपने थे।
तभी आँखें खुली मेरी,
गए वो टूट सपने थे।
भले ही नाव कागज की,
मगर वो ख्वाब सच्चे थे।
बनायें नाव फिर से हम,
भले थे स्वप्न अपने थे।।

सुरेशचन्द्र जोशी, उत्तराखंड, पिथौरागढ़।

गिरगिट जैसा रंग बदलना

कोई सीखे अखिलेश से
गिरगिट जैसा रंग बदलना,
राममंदिर जाने की मनसा
चाह हिन्दू वोट का मिलना।
करते रहे दर्शन से किनारा
अल्पसंख्यक वोट की खातिर,
छल फितरत छुपाकर मन में
जाएगा हिन्दू विरोधी
शातिर।



बाप ने गोली चलवाई
रामभक्तों की गई जान,
राममंदिर विरोधी बेटा
अवध करेगा प्रस्थान।
सनातन वोट बाँटने का चक्कर
सपा की गंदी कपटी ही चाल,
फहिनू हों जागरूक समझें रहस्य
रच रहे चुनाव जीतने का जाल।
यूपी चुनाव में जनता रहे सतर्क
न आये पीडीए नैरटिव भ्रम में,
सारा विपक्ष का लक्ष्य एक ही
नहीं रहें पीएम मोदी सत्ता मे।
ढाँचा पतन पर किया रोदन
मंदिर रुकवाने का जोर जतन,
सपा तो घोर राम का द्रोही
पुनात ग्रंथों का सम्मान हरन।
दीपावली खुशी ईद जैसी
बोल रहा खरगे बकलोल,
राहुल गाँधी का ही इशारा
कांग्रेस सोच की खुली पोल।

डॉ यमुना तिवारी व्यथित

मन के आंगन में दीप जलाएं



अमावस की रात में,
उजियारा भर जाए,
हर सूने से आंगन में,
खुशियों के दीप जल जाएं।
मिट जाएं मन के अंधियारे,
मिट जाए हर पीड़ा,
प्रेम और विश्वास से महके,
जीवन की हर क्यारी।

आओ इस दीपावली,
कुछ दीप जलाएं,
केवल घर ही नहीं,
किसी का मन भी सजाएं।

मिट्टी के दीपों में,
उम्मीदों की बाती हो,
हर चेहरे पर मुस्कान,
हर दिल में खुशहाली हो।
न कोई भूखा सोए,
न कोई अश्रु बहाए,
इंसानियत का दीप जले,
हर घर रोशन हो जाए।

धन-दौलत से बढ़कर,
रिश्तों का मान रहे,
अपनों के बीच सदा,
अपनापन और सम्मान रहे।
नफरत की दीवारें टूटे,
प्रेम के सेतु बनें,
जाति-धर्म से ऊपर उठकर,
हम सब एक रहें।

आओ इस दीपावली,
कुछ दीप जलाएं,
निराश मनों में फिर से,
आशा के फूल खिलाएँ।

एक दीप शिक्षा का हो,
जो अज्ञान मिटाए,
एक दीप सेवा का हो,
जो दुखियों के काम आए।
एक दीप प्रकृति के नाम,
हरियाली मुस्काए,
एक दीप देश के नाम,
भारत गौरव पाए।

दीपक की लौ कहती है,
संघर्षों से मत हारो,
तूफानों के बीच रहकर,
रोशनी बनकर निखरो।
अंधकार कितना भी गहरा,
टिक नहीं सकेगा,
सच्चाई का एक दीप भी,
राह दिखा सकेगा।

आओ संकल्प करें,
हर दिल को अपनाएं,
बैर-भाव को छोड़कर,
खुशियों के गीत गाएं,
घर-घर मंगल हो,
हर जीवन मुस्काए,
सुख, शांति और समृद्धि का,
नया सवेरा आए।

दीपों का यह पर्व हमें,
इतना संदेश दे जाए,
हर मन में मानवता जगे,
हर घर में प्रेम समाए।
दीपावली केवल त्योहार नहीं,
जीवन का उजास बने,
हम स्वयं दीप बन जाएं,
जग का अंधकार मिटाएं।

मोहर सिंह मीना 'सलावद'

अब किसी पर यक़ीन नहीं होता...



नफ़रत नहीं है किसी से, बस दिल लगाने का
मन नहीं होता,
अब हर मुस्कुराते चेहरे पर यक़ीन नहीं होता।
बहुत करीब से देखा है रिश्तों को रंग बदलते
हुए,
अब किसी के वादों पर भरोसा नहीं होता।
जिन्हें अपनी दुनिया समझकर सब कुछ सौंप
दिया,
उनसे बिछड़ने पर भी अब दर्द नहीं होता।
किसे अपना कहें, यहाँ अपने ही बदल जाते हैं,
अब किसी के साथ का उम्रभर का यक़ीन नहीं
होता।
कुछ ज़ख़्म ऐसे मिले हैं ख़ामोशी की शक्ल
में,
कि अब दर्द भी होता है, मगर इज़हार नहीं
होता।
न कोई शिकवा बचा है, न किसी से कोई
सवाल,
अब टूटे हुए दिल का किसी से संवाद नहीं
होता।
हमने भीड़ में रहकर तन्हाई को चुना है,
अब हर किसी से मिलना जरूरी नहीं होता।
बस इतना सा बदला है हमारे जीने का अंदाज़,
अब दिल सबके लिए धड़कता नहीं,
और जो एक बार उतर जाए नज़र से,
वो फिर कभी अपना नहीं होता!-

सुभाष बुड़ावन वाला, रतलाम.मप्र.

मैं भींडर का तालाब हूं

सिर्फ दिखने में विशाल हूं।
जितना मैं गंदा हूं अंदर से ।
उतना ही गंदा हूं बाहर से ।
हर बार यही सोचकर दुःखी हो जाता हु खुद से।।
कांच सा साफ हुआ करता था मैं भी ।
लोगों को उनकी सूरत दिखाया करता था मैं भी।
कहने को तो सूरत आज भी दिखाया करता हूं ।
बस अब फर्क सिर्फ़ इतना हैं।
पहले साफ़ दिखाया करता था।
और अब मेलि दिखाया करता हूं।।
पर इस 'था ' और 'हूं 'का जिम्मेदार मैं नहीं ।
मैं तो गंदा था ही नहीं ।
मुझे तो गंदा किया गया ।
इसमें मेरा क्या दोष ?
मेरे अंदर रहने वाले ।
उन हजारों जीवों का क्या दोष ?
जो हर रोज़ मेरे अंदर गंदगी से।
होने वाली बीमारी से लड़ते हैं ।
मानव की मूर्खता के कारण ।
मेरे अंदर रहने वाले जीव रोज़ तड़पते हैं ।
क्यों मानव मेरी और मेरे अंदर रहने वाले ।
जीवों की भावनाओं को नहीं समझते ।।
क्यों वो उनजीवों के दर्द का एहसास नहीं करते ।
कभी जो दिनभर बिताया करते थे, मेरे साथ।
हर रोज जो बातें किया करते थे , मेरे साथ।
आज वो मेरे नज़दीक नज़र तक नहीं आते हैं।
मुझे गंदा कर मानव खुद स्वच्छ बने फिरतेहैं ।
हां , ये सच है की मेरे द्वारा सींचे जाने वाले लोग।
अब मेरा ख्याल नहीं रखते हैं।।

हर्षिता चौबीसा भीण्डर, उदयपुर

दीपावली 2026

झिलमिल दीपों से सजे हैं, द्वार आज सारे,
मन के कोने से मिट जाएँ, सकल राज़ सारे।
जो सुनसान पड़े हैं दिल , उनमें उजास दो,
रूठो को मनाकर तुम, दिल में प्रकाश दो।
रंगोली के रंगों सी, जिंदगी रंगीन हो जाए,
हर चेहरे पर खुशी, यह दीपोत्सव ले आए।
क्षमा भाव जगाकर, बैर सारे त्याग दो,
सबको गले लगाकर , स्पंदन का राग दो।
अकेले पर्व नहीं मनाते, दिलों को भी जोड़ो,
नफरत की दीवारों को, सदा के लिए तोड़ो।
बुझे दिल के चरागों में, फिर से नूर भर दो,
इस दिवाली से सारे , मनभेद दूर कर दो।
यही है दीपावली, यही है पर्व
महान हमारा,
जहाँ प्रेम प्रकाश से जगमग हो
संसार सारा!



डॉ मंगलेश जायसवाल, कालापीपल, व्याख्याता डाइट सीहोर

रंग गोरा चाहिए



दूल्हा गोरा, दुल्हन गोरी,
रंग साँवला तो बात अधूरी!
चेहरे पर क्रीम की परत चढ़ाओ,
फिर शादी के बाजार में भाव बढ़ाओ!
दिमाग भले ही हो बिल्कुल खाली,
बस चमड़ी दिखनी चाहिए उजली-निराली!
दहेज मिले या न मिले, चलेगा,
बस रंग गोरा हो तो रिश्ता जमेगा!
कंपनियाँ भी खूब कमाल दिखाती हैं,
काले को गोरा बनाने की दुकान चलाती हैं!
अरे! रंग देखकर रिश्ता जोड़ने वालो,
कभी अपने भीतर का रंग भी निहारो!
चेहरा गोरा हो और मन में कालिख,
ऐसी सुंदरता किस काम की आखिर?
सूरत नहीं , सीरत पर जाइए,
अब नया वैवाहिक विज्ञापन छपवाइए,
रंग कोई भी हो, बस इंसान अच्छा चाहिए!-

सुभाष बुड़ावन वाला, रतलाम.मप्र

योग्यता का चीरहरण

योग्यता की चिंता नहीं, ये कैसी राजनीति है?
प्रतिभा का मोल नहीं, यह कैसी प्रीति है ?
यूजीसी का रोना, और यूसीसी की आस में,
झुलस रहा सामान्य वर्ग, आरक्षण की आग में!
रात-रात जागकर जो, किताबें थे खंगालते,
सपनों के आसमान में, नए पंख थे जो पालते।
आज अंक ज्यादा लाकर भी, वो खाली हाथ हैं बैठे,
सरकार के लिखे पर, भाग्य को कोस आँसू ले हैं ऐंठे।
जब ज्ञान बिके बाज़ार में, और डिग्रियां लाचार हों,
बताओ फिर इस देश में, युवा का क्या आधार हो?
प्रतिभा जार-जार है, हर आँख यहाँ नम है,
न्याय की इस दुनिया में, हौसला भी कम है!
अंकों की दौड़ में, जो सबसे आगे आया था,
परिणाम के दिन उसने, खुद को ठगा पाया था।
जाति का आधार बना, योग्यता का पैमाना,
कहाँ गया मेहनत का फल, और क्या है यह अफ़साना?
अधिकार छीना गया , हक पर पहरा लगा ,
मेधावी के सीने पर, कानून का खंजर चला ।
इंसाफ की गुहार से, गूँजता है आसमान ,
देखो आज चौराहे पर, हर युवा है परेशान !
समानता की बात करके, भेद-भाव क्यों बढ़ाते हो?
योग्य को पीछे छोड़कर, तुम किसको आगे लाते हो?
जागो उठो देश के नौजवान अब हुंकार भरो,
योग्यता के बल पर ही, तुम नया इतिहास गढ़ो!
यूजीसी और यूसीसी, सब हैं सियासत के खेल ,
इस देश के भविष्य के साथ, हो रहा यह कैसा मेल।
अब चुप न बैठो तुम सब,
हक अपना लेकर रहो ,
चाहे जो भी तूफ़ान हो, सीना
तान कर कहो !



नरेन्द्र कुमार बघरी, अखगाँव, संदेश, भोजपुर (आरा) बिहार

गिरगिट चेहरे



गिरगिट चेहरे रंग बदलते देखे,
वक़्त के साथ अपने भी बदलते देखे।
जो कल तक वफ़ा की कसमें खाते थे,
उन्हें आज रिश्ते कुचलते देखे।
चेहरों पर सद्भाव के आवरण थे,
मन में स्वार्थ के कितने कारण थे।
हमने विश्वास की लौ जलाई थी,
उन्हें उसी से हाथ मलते देखे।
जिन्हें अपना समझकर जीवन में स्थान
दिया,
जिनके लिए अपने सुखों का भी बलिदान
किया,
वही अवसर की आहट पाकर
अपनेपन के अर्थ बदलते देखे।
कभी साथ चलने की प्रतिज्ञाएँ थीं,
कभी जीवन भर निभाने की अभिलाषाएँ
थीं,
मगर स्वार्थ की धूप क्या चढ़ी,
संबंधों के साए ढलते देखे।
जिनकी आँखों में अपनापन पढ़ा था,
जिनके शब्दों में विश्वास गढ़ा था,
उनकी वाणी में मधुरता तो रही,
पर हृदय में विष के बीज पलते देखे।
यह कैसी विडंबना है मनुष्य की,
कि सत्य से अधिक मुखौटों को मानता है,
जो सामने प्रशंसा के फूल चढ़ाते हैं,
वही पीठ पीछे काँटे बिछाते हैं।
यहाँ सिद्धांतों की बातें बहुत होती हैं,
नैतिकता की दुहाइयाँ भी कम नहीं,
लेकिन जब परीक्षा की घड़ी आती है,
तो विचारों के व्यापारी बदलते देखे।
किसी की विवशता को अवसर बनाया,
किसी के विश्वास का मूल्य लगाया,
हमने संबंधों को पूजा की तरह माना,
उन्हें लाभ-हानि में तौलते देखे।
मैंने समय से बस इतना ही सीखा,
हर मुस्कान में सच्चाई नहीं होती,
हर हाथ मिलाने वाला अपना नहीं होता,
हर मधुर वचन में भलाई नहीं होती।
अब न किसी चेहरे से शिकायत है,
न किसी बदलते रंग पर आश्चर्य,
मैंने मनुष्य को उसके व्यवहार से पढ़ना
सीखा है,
शब्दों से नहीं, उसके आचरण से पहचानना
सीखा है।
क्योंकि चेहरे तो प्रतिदिन बदल सकते हैं,
विचारों पर भी नए आवरण चढ़ सकते हैं,
मगर चरित्र की वास्तविक पहचान
समय की कसौटी पर ही सामने आती है।
बेबाक़ अब किसी चेहरे का रंग नहीं पढ़ता,
न झूठे वादों पर विश्वास करता है,
मैंने अपने अनुभवों से यह जाना है–
जो अपने सिद्धांतों पर अडिग रहता है,
वही मनुष्य वास्तव में मनुष्य कहलाता है।

एस. पी. सिंह
अंबाला शहर - 7206 333 070

मेरा गाँव

आओ गाँव की सैर करा दूँ
मित्र मंडली से तुम्हें मिला दूँ
प्रकृति की गोद में बसा मेरा गाँव
बरगद पीपल की है जहाँ पे छाँव
गाँव के किनारे नदी की रवानी
कल कल बहती गीत लगे सुहानी
स्वच्छ नीर की है यहाँ पे भंडार
अन्नदाता बसते हैं संग संग हजार
गाँव की मिट्टी से बना घर हमारा
मिट्टी की दीपक देता है उजियारा
हटिया दो दिन की है सब्जी बाजार
खेत खलियान हरी भरी बहियार
गाँव में ना है सरकार की डाक्टर
झोला छाप करते ईलाज ना बेहतर
सिंचाई की समस्या का है बंटाधार
भगवान के भरोसे खेती है हमार
बाग बगिचा अमुवां की है वो डाली
पत्ते में छुप कूकती कोयलिया काली
अमावश की काली रात का उपहार
पुरवाई ले आती खुशबू की बयार
शांत सौम्य मृदुभाषी है मेरा पड़ोसी
संस्कारी सुसंगति खानदानी है पुरवासी
वैमनस्यता की नहीं है यहाँ सहचार
सुख समृद्ध शांत है अपना गाँव जवार
सामाजिक परिवेश ग्रामीणों का है प्यारा
दुश्मन की समझ लेता है छल का ईशारा
चबूतरे पर लगती है चौपाल की दरवार
मन भावन है गाँव की अपनी सरकार
वो खड़ा है बूढ़ा बरगद का गाँव का पेड़
पगडंडी बन गई है खेतों की ये मेड़
मैदानों में चरती बकरी संग गोली भेड़
शैतानों की नहीं है यहाँ पर खैर
धन्नो काकी सबकी गाय है चराती
रोटी संग चने की शाक सबको भाती
खग की कलरव संगीत स्वर झंकार
यहाँ ना बसता कोई दुष्ट या बरियार
चाँदनी रात है जंगल में अति सुहानी
दादी सुनाती राजा रानी की कहानी
रामू काका को है हुक्के से बड़ी प्यार
मदिरा की नहीं होती यहाँ पे व्यापार



उदय किशोर साह
मो पो जयपुर जिला बांका बिहार

राम नाम के नाम पर

राम नाम के नाम पर
नहीं मिलेगा वोट ।
जनता जान चुकी है
तेरे मन का खोट।

इस बार चुनाव में तेरी
काम न आएगी तेरी नोट।
जनता तुमको देगी
देखो भारी चोट।

सत्ता तेरे हाथ से चली जाएगी देख
वोटों की इस बार, नहीं मिलेगी भेट।
जितना जुर्म किया है तुमने
उसकी होगी मटियामेट।

कुर्सी से चिपके रहने की
आदद जाएगी तेरी छूट।
मिट जाएगी तेरी
ई वी एम की लूट।

राम नाम की माला
अब तो ले समेट।
जनता तेरी कान पकड़कर
देगी इस बार उमेठ।

लूटकर धन देश का
तेरा भर गया है पेट।
अब तो अपनी बोरिया-बिस्तर
जल्दी से ले समेट।

बद्री प्रसाद वर्मा अनजान
गल्ला मंडी गोलाबाजार
273408
गोरखपुर उ. प्र.

नमन है

नमन है रक्त-सिंचित हल्दीघाटी को,
वहाँ की पीत-वर्ण पवित्र माटी को।
नमन वीर क्षत्रियों उन खांटी को,
नमन है उस बलिदानी परिपाटी को।।

नमन है आन-बान और शान को,
उस रक्तरंजित तलवार-म्यान को।
नमन है राजपूत वीर शक्ति को,
अश्व चेतक की स्वामिभक्ति को।।

राष्ट्र के लिए दी गई उस कुर्बानी को,
नमन है ऐसे वीर स्वाभिमानी को।
नमन है शहीद उन नौजवानों को,
हँसकर उत्सर्ग किया जो प्राणों को।।

नमन है उनकी शौर्य गाथाओं को,
जौहर करने वाली बहनों-माताओं को।
नमन वनवासी वीर भील वीरों को,
उन साबित हुए मील के पत्थरों को।।

नमन उस भामाशाह सेठ दानी को,
उनके पूर्ण समर्पण निशानी को।
सारे राष्ट्र का सिर झुक चुका था,
सबका मनोबल तब टूट चुका था।।

राणा प्रताप ही शख्स अकेला था,
झुका नहीं, लाख कष्टों को झेला था।
मान-मर्दन किया उस क्रूर अकबर का,
मात दी उस अहंकारी दिलीश्वर का।।

बार-बार नमन महाराणा प्रताप को।
नमन उनकी वीरता व पुण्य-प्रताप को।।

नरेंद्र सिंह, अतरी, गया जी

चलो रोशन करें सबके घर

अवध में लौट आये श्रीराम
जपो मन प्यारे जय श्रीराम
माता सीता भाई लक्ष्मण से
स्वागत करो सब अंतर्मन से

घी के दीये की थाल सजा
देहरी का आकर दीप लगा
आंगन उजियारा हो सबका
आ दीपशिखा सा बढ़ता जा

अंधियारे से लड़ना सीखो
आगे कदम बढ़ाना सीखो
मंजिल दूर नहीं है तुम से
थोड़ा थोड़ा चलना सीखो

दुल्हन सी सजी अयोध्या
कितनी मनोहर लगती है
रिश्तों की ये बगिया तो
प्रेम , प्यार से सजती है

मिष्ठानों की भर भर थाली
चुन्नू, मुन्नू डेविड ने खाली
अरमानों के पंख लगाकर
उड़कर चली आई दीवाली
आस का दीपक जलाकर
स्नेह की बाती सजाकर
प्रेम से फिर दीप बनाकर
चलो रोशन करें सब के



- डॉ. राजेश पुरोहित
भवानीमंडीघर

देवारी के पाँचों परब



(मौलिक छत्तीसगढ़ी गीत)
धनतेरस के जोत जले, मंगल होय बिहान,
धन्वंतरि के किरपा बर, निरोगी रहय जहान।
नरक चतुर्दशी सीख देवय, मन के मैल मिटाव,
द्वेष-घमंड ला दूर करके, सद्भाव के जोत जलाव।
देवारी के अमावस मा, घर-घर दीया बारव,
राम-सीता के आगमन के, मंगल गीत सुनावव।
लछमी-गनेस के पूजा करके, सुख-समृद्धि मनाव,
मन के कोना-कोना म, प्रेम के दीप जलाव।
गोवर्धन के पूजा कर, धरती के मान बढ़ाव,
गाय-बइला अउ वन-उपवन के, सेवा-सुमिरन गुन
गाव।
अन्नकूट के भोग लगाके, मिल-जुल प्रसाद खाव,
कान्हा के संदेशा लेके, प्रकृति के मान बढ़ाव।
भाई दूज के तिलक लगाके, बहिनी अरजी लगाय,
भइया के सुख अउ उमर बर, यमराज ले मनुहार कराय।
पाँचों परब कहंय मिलके, मया के जोत जलाव,
मनखे-मनखे एक समान, प्रेम के संसार बनाव।

...दयाराम साहू
ग्राम- डौकाबांधा (बंजारी)
जिला- कबीरधाम (छत्तीसगढ़)

दीप से दीप जले निरन्तर यही पुकार हमारी

जगमग जगमग दीप जले, अंधियारा सारा भागे,
संस्कृति और आस्था के पावन बंधन जागे।
झिलमिल दीपों की माला से, सजी अयोध्या सारी,
आई रे आई,देखो सब दीपावली सुहानी आई।
तमसो मा ज्योतिर्गमय का, मंत्र गूँजता द्वारे,
अज्ञान अंधकार को चीरकर, प्रकाश दीप पुकारे।
मन के भीतर की कालिक को, आज मिटाना है,
प्रेम और विश्वास का दीपक, दिलों में जलाना है।
सुख-समृद्धि की बहार है, खुशियों की शहनाई,
आई रे आई, देखो सब दीपावली सुहानी आई!
राम लौटे नगर अयोध्या, छाई छटा निराली,
मां लक्ष्मी-गणेश की पूजा, खुशियां पहुँची।
भेद-भाव के बंधन टूटे, अपना-पराया न छूटे,
स्नेह के इस पावन उत्सव पर, सबके मुँह से फूटे।
मिट्टी के इन नन्हे दीपों में, राष्ट्र की चेतना जागी,
पावन रोशनी से जगमग जगमग करती धरती।
दीप से दीप जले निरन्तर यही पुकार हमारी,
खुशियों से रोशन हो जाए, दुनिया प्यारी प्यारी!
आई रे आई, देखो सब दीपावली सुहानी आई!



डॉ. मुश्ताक़ अहमद शाह सहज
हरदा मध्य प्रदेश

दोहा गजल



रहे जूझते तमस से, कभी न हारे दीप।
भटके राही के सदा, बने सहारे दीप।।

खुशियाँ नाचें देहरी, धर कर रूप नवीन।
बजा रहे शहनाइयाँ, जग के सारे दीप।।

अंधकार डर कर भगे, देख सुनहरी ज्योति।
ढोल बजा कर हँस पड़े, प्रमुदित प्यारे दीप।

साहस भरते हृदय में, निर्जन कानन बीच।
सघन अँधेरी रात में, झिलमिल तारे दीप।।

तमस हमेशा हारता, जीते नवल प्रकाश।
पाहुन का स्वागत करें, सज्जित द्वारे दीप।।

प्रमोद दीक्षित मलय
शिक्षक, बाँदा, उत्तर प्रदेश
मोबा. 9452085234

दीप सबके लिए..

आओ एक दीप जलाएँ, हर अँधेरा मिटाएँ,
मन का मैल धोकर, हम सबको गले लगाएँ॥

न कोई ऊँचा है, न कोई नीचा यहाँ,
हर दिल में बसता है, एक ही जहाँ।
दीप नहीं पूछता, किसका है ये घर,
उजाला सबका है, यही सबको बताएं।
आओ एक दीप जलाएँ, हर अँधेरा मिटाएँ...॥

जो भूखा है उसको, रोटी भी खिलाएँ,
जो रूठा है उसको, हँसकर मनाएँ।
आओ इस दीवाली, ये प्रण हम करें,
नफ़रत को भुला कर, प्रेम बढ़ाएं।
आओ एक दीप जलाएँ, हर अँधेरा मिटाएँ...॥

हम मिलकर ऐसा, सुंदर संसार रचें,
जहाँ हर दिल में, बस प्यार ही प्यार बसे।
छोटा-बड़ा कोई नहीं, सब बराबर हों,
दीप पर्व पर यही, सच्चा त्योहार बनाएँ।
आओ एक दीप जलाएँ, हर अँधेरा मिटाएँ...॥

एक दीप जलाकर, सौ दीप जलाएँ,
घर-घर में खुशियों की, रोशनी फैलाएँ।
दिल से दिल मिले, तो दूरियाँ मिट जाएँ,
इस दीप पर्व पर, सब अपने कहलाएँ।
आओ एक दीप जलाएँ, हर अँधेरा मिटाएँ...॥

मन की कड़वाहट को, आज हम भुलाएँ,
माफ़ी और ममता से, हर रिश्ता सजाएँ।
जहाँ अँधेरा हो, वहाँ दीप जलाएँ,
प्यार की लौ से ही, ये जग जगमगाएँ।
आओ एक दीप जलाएँ, हर अँधेरा मिटाएँ...॥

अजय जैन विकल्प संपर्क- 9770067300

वर्दी का क़र्ज़



त्यौहार में भी फ़र्ज़ निभाने में लगे हैं
वर्दी का ही वो क़र्ज़ चुकाने में लगे हैं

इक दीप तो उनके लिए भी घर में जला दो
सरहद पे जो भारत को बचाने में लगे हैं

कवयित्री त्रिशिका धरा, कानपुर